

## सूरह ज़ारियात - 51



### सूरह ज़ारियात के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 60 आयतें हैं।

- ज़ारियात का अर्थ है ऐसी वायु जो धूल उड़ाती हो। इस की आयत 1 से 6 तक में तूफानी तथा वर्षा करने वाली हवाओं और संसार की रचना तथा व्यवस्था में जो मनुष्य को सचेत कर देती है, उन के द्वारा इस बात की ओर ध्यान दिलाया गया है कि कर्मों का प्रतिफल मिलना आवश्यक है। तथा इसी प्रकार कर्मफल के इन्कार और उपहास के दुष्परिणाम से सावधान किया गया है।
- आयत 15 से 19 तक में अल्लाह से डरने तथा सदाचार का जीवन व्यतीत करने की प्रेरणा दी गई है। और उस का उत्तम फल बताया गया है।
- आयत 20 से 23 तक में उन निशानियों की ओर ध्यान दिलाया गया है जो आकाश तथा धरती में और स्वयं मनुष्य में हैं। जो इस बात का प्रमाण है कि अल्लाह की यातना का नियम इस संसार में भी काफ़िरों पर लागू होता रहा है।
- अन्त में आयत 47 से 60 तक अल्लाह की शक्ति तथा महिमा का वर्णन करते हुये उस की ओर लपकने और उस की वंदना करने का आमंत्रण दिया गया है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त  
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. शपथ है (बादलों को) बिखेरने  
वालियों की!

وَالَّذِينَ ذُرُّوا۟

2. फिर (बादलों का) बोझ लादने  
वालियों की!

فَالْحَمَلُۥ وَوُفُّوا۟

3. फिर धीमी गति से चलने वालियों की!

فَالْجُرُۥتِ يُرَّو۟ا۟

4. फिर (अल्लाह का) आदेश बाँटने वाले (फ़रिश्तों की)!
5. निश्चय जिस (प्रलय) से तुम्हें डराया जा रहा है वह सच्ची है।<sup>[1]</sup>
6. तथा कर्मों का फल अवश्य मिलने वाला है।
7. शपथ है रास्तों वाले आकाश की!
8. वास्तव में तुम विभिन्न<sup>[2]</sup> बातों में हो।
9. उस से वही फेर दिया जाता है जो (सत्य से) फिरा हुआ हो।
10. नाश कर दिये गये अनुमान लगाने वाले।
11. जो अपनी अचेतना में भूले हुये हैं।
12. वह प्रश्न<sup>[3]</sup> करते हैं कि प्रतिकार का दिन कब है?
13. (उस दिन है) जिस दिन वह अग्नि पर तपाये जायेंगे।
14. (उन से कहा जायेगा): स्वाद चखो अपने उपद्रव का। यही वह है जिस की तुम शीघ्र माँग कर रहे थे।
15. वास्तव में आज्ञाकारी स्वर्गों तथा जल स्रोतों में होंगे।

فَالْمَقْسَمَاتِ أَمْرًا ۝

إِنَّمَا تُوعَدُونَ لَصَادِقٌ ۝

وَالَّذِينَ الَّذِينَ لَوْ أَرَادُوا ۝

وَالسَّمَاءِ ذَاتِ الْحُبُوبِ ۝

إِنَّمَا لَكُمْ قَوْلٌ مُّخْتَلِفٌ ۝

يُؤْتِكُ عَنْهُ مَنْ آفَكَ ۝

مِثْلَ الْخَرُوصِ ۝

الَّذِينَ هُمْ فِي غَمْرَةٍ سَاهُونَ ۝

يَسْأَلُونَ أَيَّانَ يَوْمِ الدِّينِ ۝

يَوْمَ هُمْ عَلَى النَّارِ يُفْتَنُونَ ۝

ذُوقُوا فِتْنَتَكُمْ هَذَا الَّذِي كُنْتُمْ بِهِ تُسْتَعْجَلُونَ ۝

إِنَّ الْمُنْتَفِعِينَ فِي جَنَّتِ وَعُيُونٌ ۝

1 इन आयतों में हवाओं की शपथ ली गई है कि हवा (वायु) तथा वर्षा की यह व्यवस्था गवाह है कि प्रलय तथा परलोक का वचन सत्य तथा न्याय का होना आवश्यक है।

2 अर्थात् कुर्आन तथा प्रलय के विषय में विभिन्न बातें कर रहे हैं।

3 अर्थात् उपहास स्वरूप प्रश्न करते हैं।

16. लेते हुये जो कुछ प्रदान किया है उन को उन के पालनहार ने। वस्तुतः वह इस से पहले (संसार में) सदाचारी थे।
17. वह रात्रि में बहुत कम सोया करते थे।<sup>[1]</sup>
18. तथा भोरों<sup>[2]</sup> में क्षमा माँगते थे।
19. और उन के धनों में माँगने वाले तथा न पाने वाले<sup>[3]</sup> का भाग था।
20. तथा धरती में बहुत सी निशानियाँ हैं विश्वास करने वालों के लिये।
21. तथा स्वयं तुम्हारे भीतर (भी)। फिर क्या तुम देखते नहीं?
22. और आकाश में तुम्हारी जीविका<sup>[4]</sup> है, तथा जिस का तुम्हें वचन दिया जा रहा है।
23. तो शपथ है आकाश एवं धरती के पालनहार की यह (बात) ऐसे ही सच्च है जैसे तुम बोल रहे हो।<sup>[5]</sup>
24. (हे नबी!) क्या आई आप के पास

اِخْدِيْنَ مَا آتٰهُمْ رَبُّهُمْ اَنَّهُمْ كَانُوْا قَبْلَ ذٰلِكَ مُخْسِيْنَ ۝

كَانُوْا قَلِيْلًا مِّنَ الَّيْلِ مَا يَهْجَعُوْنَ ۝

وَبِالْاَسْحَارِ هُمْ يَسْتَغْفِرُوْنَ ۝

وَفِيْ اَمْوَالِهِمْ حَقٌّ لِّلسَّآئِلِ وَالْمَحْرُوْمِ ۝

وَفِي الْاَرْضِ اٰيٰتٌ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ۝

وَفِيْ اَنْفُسِكُمْ اَفْلا تَبْصُرُوْنَ ۝

وَفِي السَّمَآءِ رِزْقَكُمْ وَمَا تَوْعَدُوْنَ ۝

قَوْرَبِ السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ اِنَّهٗمْ يَسْئَلُ مَا اَنْتُمْ سٰئِلُوْنَ ۝

هَلْ اَتٰكَ حَدِيْثٌ صٰبِعِ اِبْرٰهِيْمَ الْمُكْرَمِ ۝

- 1 अर्थात् अपना अधिक समय अल्लाह के स्मरण में लगाते थे। जैसे तहज्जुद की नमाज़ और तस्बीह आदि।
- 2 हदीस में है कि अल्लाह प्रत्येक रात में जब तिहाई रात रह जाये तो संसार के आकाश की ओर उतरता है। और कहता है: है कोई जो मुझे पुकारे तो मैं उस की पुकार सुनूँ? है कोई जो माँगे, तो मैं उसे दूँ? है कोई जो मुझ से क्षमा माँगे, तो मैं उसे क्षमा करूँ। (बुखारी: 1145, मुस्लिम: 758)
- 3 अर्थात् जो निर्धन होते हुये भी नहीं माँगता था इसलिये उसे नहीं मिलता था।
- 4 अर्थात् आकाश की वर्षा तुम्हारी जीविका का साधन बनती है। तथा स्वर्ग और नरक आकाशों में हैं।
- 5 अर्थात् अपने बोलने का विश्वास है।



इब्राहीम के सम्मानित अतिथियों की सूचना?

25. जब वे आये उस के पास तो सलाम किया। इब्राहीम ने (भी) सलाम किया (तथा कहा): अपरिचित लोग हैं।
26. फिर चुपके से अपने परिजनों की ओर गया। और एक मोटा (भुना हुआ) बछड़ा लाया।
27. फिर रख दिया उन के पास, उस ने कहा: तुम क्यों नहीं खाते हो?
28. फिर अपने दिल में उन से कुछ डरा, उन्होंने कहा: डरो नहीं। और उसे शुभसूचना दी एक ज्ञानी पुत्र की।
29. तो सामने आई उस की पत्नी, और उस ने मार लिया (आश्चर्य से) अपने मुँह पर हाथ। तथा कहा: मैं बाँझ बुढ़िया हूँ।
30. उन्होंने कहा: इसी प्रकार तेरे पालनहार ने कहा है। वास्तव में वह सब गुण और सब कुछ जानने वाला है।
31. उस (इब्राहीम) ने कहा: तो तुम्हारा क्या अभियान है, हे भेजे हुये (फरिश्तो!)?
32. उन्होंने कहा: वास्तव में हम भेजे गये हैं एक अपराधी जाति की ओर।
33. ताकि हम बरसायें उन पर पत्थर की कंकरी।

إِذْ دَخَلُوا عَلَيْهِ فَقَالُوا سَلَامًا قَالَ سَلَامٌ قَوْمٌ مُّسْكِرُونَ ﴿٢٥﴾

فَوَاعَدُوا إِلَىٰ آهْلِهِ فَجَاءَ بِعِجْلٍ صَبِيٍّ ﴿٢٦﴾

فَقَرَّبَهُ إِلَيْهِمْ قَالَ أَلَا تَأْكُلُونَ ﴿٢٧﴾

فَأَوْجَسَ مِنْهُمْ خِيفَةً قَالُوا لَا تَفْتِنْهُمْ وَبَشِّرُوهُمْ بَعْلُمْ عِلَيْنِ ﴿٢٨﴾

فَأَقْبَلَتِ امْرَأَتُهُ فِي صَرَخٍ فَصَكَتْ وَجْهَهَا وَقَالَتْ عَجُوزٌ عَقِيمٌ ﴿٢٩﴾

قَالُوا كَذَلِكَ قَالَ رَبُّكَ إِنَّهُ هُوَ الْحَكِيمُ الْعَلِيمُ ﴿٣٠﴾

قَالَ فَمَا خَطْبُكُمْ أَيُّهَا الْمُرْسَلُونَ ﴿٣١﴾

قَالُوا إِنَّا أُرْسِلْنَا إِلَىٰ قَوْمٍ مُّجْرِمِينَ ﴿٣٢﴾

لِنُرْسِلَ عَلَيْهِمْ حِجَارَةً مِّنْ طِينٍ ﴿٣٣﴾

34. नामांकित<sup>[1]</sup> तुम्हारे पालनहार की ओर से उल्लंघनकारियों के लिये।

مُسَوِّءَةٌ عِنْدَ رَبِّكَ لِلْمُؤْمِنِينَ ﴿٣٤﴾

35. फिर हम ने निकाल दिया जो भी उस (बस्ती) में ईमान वाले थे।

فَأَخْرَجْنَا مَنْ كَانَ فِيهَا مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ﴿٣٥﴾

36. और हम ने उस में मुमिनों का केवल एक ही घर<sup>[2]</sup> पाया।

فَمَا وَجَدْنَا فِيهَا غَيْرَ بَيْتٍ مِنَ الْمُسْلِمِينَ ﴿٣٦﴾

37. तथा छोड़ दी हम ने उस (बस्ती) में एक निशानी उन के लिये जो डरते हों दुःखदायी यातना से।

وَتَرَكْنَا فِيهَا آيَةً لِلَّذِينَ يَخَافُونَ الْعَذَابَ الْكَلِيمَ ﴿٣٧﴾

38. तथा मूसा (की कथा) में, जब हम ने भेजा उसे फिरौन की ओर प्रत्यक्ष (खुले) प्रमाण के साथ।

وَفِي مُوسَى إِذْ أَرْسَلْنَاهُ إِلَىٰ فِرْعَوْنَ بِسُلْطَانٍ مُّبِينٍ ﴿٣٨﴾

39. तो वह विमुख हो गया अपने बल-बूते के कारण, और कह दिया की जादूगर अथवा पागल है।

فَتَوَلَّىٰ بُرْجَانِهِ وَقَالَ سِحْرٌ أَوْ أَجْنُونٌ ﴿٣٩﴾

40. अन्ततः हम ने पकड़ लिया उस को तथा उस की सेनाओं को, फिर फेंक दिया उन को सागर में और वह निन्दित हो कर रह गया।

فَأَخَذْنَاهُ وَجُودَهُ فَنَبَذْنَاهُ فِي الْيَمِّ وَهُوَ مُلَوِّمٌ ﴿٤٠﴾

41. तथा आद में (शिक्षाप्रद निशानी है)। जब हम ने भेज दी उन पर बाँझ<sup>[3]</sup> आँधी।

وَفِي عَادٍ إِذْ أَرْسَلْنَا عَلَيْهِمُ الرِّيحَ الْعَقِيمَ ﴿٤١﴾

42. वह नहीं छोड़ती थी किसी वस्तु को जिस पर गुज़रती परन्तु उसे बना देती थी जीर्ण चूर-चूर हड्डी के समान।

مَا تَذَرُ مِنْ شَيْءٍ أَتَتْ عَلَيْهِ إِلَّا جَعَلَتْهُ كَالْزُرِّ الْمَيْمِ ﴿٤٢﴾

1 अर्थात प्रत्येक पत्थर पर पापी का नाम है।

2 जो आदर्णीय लूत (अलैहिस्सलाम) का घर था।

3 अर्थात अशुभा (देखिये: सूरह हाक्का. आयत: 7)

43. तथा समुद्र में जब उन से कहा गया कि लाभान्वित हो लो एक निश्चित समय तक।

وَفِي شَمُودَ إِذْ قِيلَ لَهُمْ تَمَتَّعُوا حَتَّىٰ جُنُودُ

44. तो उन्होंने अवैज्ञा की अपने पालनहार के आदेश की तो सहसा पकड़ लिया उन्हें कड़क ने, और वह देखते रह गये।

فَعَتَوْا عَنْ أَمْرِ رَبِّهِمْ فَأَخَذَتْهُمُ الضُّعِفَةُ وَهُمْ يَنْظُرُونَ ﴿٤٤﴾

45. तो वे न खड़े हो सके और न (हम से) बदला ले सके।

فَمَا اسْتَطَاعُوا مِنْ قِيَامٍ وَمَا كَانُوا مُنْتَصِرِينَ ﴿٤٥﴾

46. तथा नूह<sup>[1]</sup> की जाति को इस से पहले (याद करो)। वास्तव में वह अवैज्ञाकारी जाति थे।

وَقَوْمَ نُوحٍ مِنْ قَبْلُ إِنَّهُمْ كَانُوا قَوْمًا فَاسِقِينَ ﴿٤٦﴾

47. तथा आकाश को हम ने बनाया है हाथों<sup>[2]</sup> से और हम निश्चय विस्तार करने वाले हैं।

وَالسَّمَاءَ بَنَيْنَاهَا يَاسِيدٍ وَإِنَّا لَمُوَسِّعُونَ ﴿٤٧﴾

48. तथा धरती को हम ने बिछाया है तो हम क्या<sup>[3]</sup> ही अच्छे बिछाने वाले हैं।

وَالْأَرْضَ فَرَشْنَاهَا فَنِعْمَ الْمُبْدُونَ ﴿٤٨﴾

49. तथा प्रत्येक वस्तु का हम ने उत्पन्न किया है जोड़ा, ताकि तुम शिक्षा ग्रहण करो।

وَمِنْ كُلِّ شَيْءٍ خَلَقْنَا زَوْجَيْنِ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُونَ ﴿٤٩﴾

50. तो तुम दौड़ो अल्लाह की ओर, वास्तव

فَعَرِّضُوا إِلَى اللَّهِ إِنِّي لَكُمْ مِنْهُ نَذِيرٌ مُبِينٌ ﴿٥٠﴾

1 आयत 31 से 46 तक नबियों तथा विगत जातियों के परिणाम की ओर निरंतर संकेत कर के सावधान किया गया है कि अल्लाह के बदले का नियम बराबर काम कर रहा है।

2 अर्थात् अपनी शक्ति से।

3 आयत का भावार्थ यह है कि जब सब जिन्हें तथा मनुष्यों को अल्लाह ने अपनी वंदना के लिये उत्पन्न किया है तो अल्लाह के सिवा या उस के साथ किसी जिन्न या मनुष्य अथवा फ़रिश्ते और देवी देवता की वंदना अवैध और शिर्क है। जिस के लिये क्षमा नहीं है। (देखिये: सूरह निसा, आयत: 48, 116)। और जो व्यक्ति शिर्क कर लेता है तो उस के लिये स्वर्ग निषेध है। (देखिये: सूरह माइदा, आयत: 72)



मैं मैं तुम्हें उस की ओर से प्रत्यक्ष रूप से (खुला) सावधान करने वाला हूँ।

51. और मत बनाओ अल्लाह के साथ कोई दूसरा पूज्य। वास्तव में मैं तुम्हें इस से खुला सावधान करने वाला हूँ।

52. इसी प्रकार नहीं आया उन के पास जो इन (मक्का वासियों) से पूर्व रहे कोई रसूल परन्तु उन्होंने ने कहा कि जादूगर या पागल है।

53. क्या वह एक दूसरे को वसियत<sup>[1]</sup> कर चुके हैं इस की? बल्कि वे उल्लंघनकारी लोग हैं।

54. तो आप मुख फेर लें उन से। आप की कोई निन्दा नहीं है।

55. और आप शिक्षा देते रहें। इसलिये कि शिक्षा लाभप्रद है ईमान वालों के लिये।

56. और नहीं उत्पन्न किया है मैं ने जिन्न तथा मनुष्य को परन्तु ताकि मेरी ही इबादत करें।

57. मैं नहीं चाहता हूँ उन से कोई जीविका, और न चाहता हूँ कि वह मुझे खिलायें।

58. अवश्य अल्लाह ही जीविका दाता शक्तिशाली बलवान् है।

59. तो इन अत्याचारियों के पाप हैं इन

وَلَا تَجْعَلُوا مَعَ اللَّهِ إِلَهًا آخَرَ إِنِّي لَكُم مِّنْهُ نَذِيرٌ مُّبِينٌ ۝

كَذَلِكَ مَا آتَى الَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ مِنْ رَسُولٍ إِلَّا قَالُوا سَاحِرٌ أَوْ مُجُنٌّ ۝

أَتَوَصَّوهُ بِالْحَمَىٰ فَهُمْ قَوْمٌ طَٰغُونَ ۝

فَقَوْلٌ عَنْهُمْ فَمَا أَنتَ بِمَلُومٌ ۝

وَذَكِّرْ فَإِنَّ الذِّكْرَى تَنْفَعُ الْمُؤْمِنِينَ ۝

وَمَا خَلَقْتُ الْجِنَّ وَالْإِنسَ إِلَّا لِعِبَادَتِي ۝

مَا أُرِيدُ مِنْهُمْ مِنْ رِزْقٍ وَمَا أُرِيدُ أَنْ يُطْعَمُوا ۝

إِنَّ اللَّهَ هُوَ الرَّزَّاقُ ذُو الْقُوَّةِ الْمَتِينُ ۝

فَإِنَّ لِلَّذِينَ ظَلَمُوا ذُنُوبًا مِّثْلَ ذُنُوبِ أَصْحَابِهِمْ

1 वसियत का अर्थ है: मरणसन्न आदेश। अर्थ यह कि क्या वे रसूलों के इन्कार का अपने मरण के समय आदेश देते आ रहे हैं कि यह भी अपने पूर्व के लोगों के समान रसूल का इन्कार कर रहे हैं?

के साथियों के पापों के समान अतः  
वह उतावले न बनें।

60. अन्ततः विनाश है काफ़िरों के लिये  
उन के उस दिन<sup>[1]</sup> से जिस से वह  
डराये जा रहे हैं।

فَلَا يَسْتَعْجِلُونَ ۝

قَوْلِ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ يَوْمِهِمُ الَّذِي  
يُوعَدُونَ ۝

1 अर्थात् प्रलय के दिन।